

Padma Shri



SHRI A.K.C. NATARAJAN

Shri A.K.C. Natarajan is one of the senior most Carnatic music exponents of the country.

2. Born on 1st July, 1929 in Tiruchirappalli, Tamil Nadu to Shri A.K. Chinnakrishna Naidu and Smt Rukmini Ammal, Shri Natarajan comes from a musical family that has been devoted to wind instruments.. From the age of 10, he learnt vocal music from Alathur Venkatesa Iyer and the Nagaswaram from Iluppur Natesa Pillai. Though proficient in vocal music, Shri Natarajan preferred the Clarinet in which he gave his first public performance in 1946 and was acclaimed by leading artistes of the day.

3. Shri Natarajan joined the All India Radio in 1949 and served at Calicut and New Delhi. There he was a part of the VadyaVrinda musical ensemble and worked along with the Sitar maestro Pandit Ravi Shankar. He resigned his job to become a full-fledged Clarinet artiste in 1952. His performance that year in Madras was praised by the doyen Ariyakudi Ramanuja Iyengar. He was also given encouragement by the Nagaswaram maestro T.N. Rajarathinam Pillai who conferred on him the title 'Clarinet Everest'. He has performed widely in India and made concert tours to countries like U.S.A., Canada, U.K., Germany, New Zealand, Singapore, Malaysia and Sri Lanka. His name became synonymous with the Clarinet and enjoyed immense popularity. In 1958, he was presented a Golden Clarinet in appreciation of his successful evolution as a much sought after musician.

4. Shri Natarajan is not only a great performer but also an innovator. His Raga Alapanas, his Swara renditions and above all his special way of presenting Kritis are unique. His Jugalbandi concerts along with veteran musicians and Jangroups abroad were highly appreciated. He has given a different dimension to Carnatic music and has propounded a new school of music with his innovative style. His work and methodology have been the subject of a research study by Prof. William Powell of the Wesleyan University, U.S.A.

5. A Top Grade Artiste of the All India Radio, Shri Natarajan served as the Secretary of Sri Thyagabrahma Mahotsava Sabha, Thiruvaiyaru and was appointed as the Asthana Vidwan of religious mutts such as Kanchi Kamakoti Peetham, Sringeri Sharada Peetham, Thiruvavaduthurai Adheenam and Dharmapuram Adheenam. Shri Natarajan was honored by the Mayor of Cleveland, U.S.A., with 'The Key of City' in 1970. Hailed as a living legend, he still continues to perform even at the ripe age of 92 and inspires the next-gen musicians through his recitals.

6. In recognition of his distinguished service to Carnatic music, Shri Natarajan has been bestowed with numerous prestigious awards and titles. His accolades include the 'Sangeet Natak Akademi Award' by the Government of India, Vitasavai Kalaignar' State Artiste Honor and talaimamani' by the Government of Tamil Nadu, 'Sangita Kalanidhi' from The Music Academy, Madras and 'Isai Perarignar' from Tamil Isai Sangam, Chennai.

पद्म श्री



श्री ऐ.के.सि. नटराजन

श्री ऐ.के.सी. नटराजन देश के सबसे वरिष्ठ कर्नाटक संगीत प्रतिपादकों में से एक हैं।

2. 1 जुलाई, 1929 में तिरुचिरापल्ली, तमिलनाडु में श्री ऐ.के. चिन्नाकृष्ण नायडु और श्रीमती रुकमणी अम्मल के घर जन्में, श्री नटराजन एक ऐसे संगीत घराने से आते हैं जो वायु वाद्ययंत्रों के लिए समर्पित है। 10 वर्ष की उम्र से उन्होंने अल्थुर वेंकटेश अय्यर और इलुप्पुर नतेसा पिल्लई से स्वर संगीत सीखा। हालांकि स्वर संगीत में प्रवीण, श्री नटराजन ने क्लेरियोनेट को प्राथमिकता दी, जिसमें उन्होंने 1946 में अपना पहला सार्वजनिक प्रदर्शन दिया और उस समय के प्रमुख कलाकारों ने प्रशंसा की।
3. श्री नटराजन 1949 में आकाशवाणी से जुड़े और कालीकट एवं नई दिल्ली में सेवा दी। वह वहाँ वाद्य वृंदा संगीत समूह का हिस्सा थे और उन्होंने सितारवादक पंडित रवि शंकर के साथ काम किया। उन्होंने 1952 में एक पूर्ण क्लेरियोनेट कलाकार बनने के लिए अपनी नौकरी से इस्तीफा दे दिया। उस वर्ष मद्रास में उनके प्रदर्शन की प्रशंसा अरियाकुडी रामानुज लैंगर ने की। उनको नागस्वरम उस्ताद टी.एन. राजरितिनम पिल्लई ने भी प्रोत्साहित किया और उन्हें 'क्लेटियोनेट ऐवरेस्ट' की उपाधी से सम्मानित किया। उन्होंने भारत में व्यापक रूप से प्रदर्शन किया है और संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, यू.के., जर्मनी, न्यूजीलैंड, सिंगापुर, मलेशिया और श्रीलंका जैसे देशों में संगीत कार्यक्रम किये हैं। उनका नाम क्लेरियोनेट का पर्याय बन गया और उन्हें आपार लोकप्रियता भी मिली। वर्ष 1958 में, संगीतकार के रूप में उनके सफल विकास की यात्रा को ध्यान में रखते हुए उन्हें गोल्डेन क्लेरियोनेट से नवाजा गया था।
4. श्री नटराजन न केवल एक महान कलाकार हैं, बल्कि एक इनोवेटर भी हैं। उनके राग अलाप, उनकी स्वर प्रस्तुतियाँ और कृतियों को प्रस्तुत करने का उनका विशेष अद्वितीय तरीका है। कंसर्ट अनुभवी संगीतकारों और विदेशों में जांगग्रुप के साथ उनके जुगलबंदी कंसर्ट को बहुत सराहा गया। उन्होंने कर्नाटक संगीत को एक अलग आयाम दिया और अपनी नवीन शैली के साथ संगीत के एक नये स्कूल की स्थापना की है। उनके कार्य और कार्यप्रणाली वेस्लेयन विश्वविद्यालय, यू.एस.ए. के प्रो. विलियम पावेल द्वारा शोध अध्ययन का विषय रहा है।
5. ऑल इंडिया रेडियो के एक शीर्ष स्तर के कलाकार के तौर पर, श्री नटराजन ने श्री त्याग ब्रह्म महोत्सव सभा, तिरुवयाड के सचिव के रूप में कार्य किया और उन्हें कांची कामकोटी पीठम, श्रीगेरी शार्दा पीठम, तिरुवदु तुरेई, अधिनम और धर्मपुरम अधिनम जैसे धार्मिक मठों के अस्थाना विद्वान के रूप में नियुक्त किया गया। श्री नटराजन को 1970 में किलवलेड, संयुक्त राज्य अमेरिका के मेयर द्वारा 'द कि ऑफ सिटी' से सम्मानित किया गया। एक जीवित विराट व्यक्तित्व के रूप में प्रसिद्ध, वह अभी भी 92 वर्ष की परिपक्व उम्र में भी प्रदर्शन जारी रखते हैं और अपने गायन के माध्यम से अगली पीढ़ी के संगीतकारों को प्रेरित करते हैं।
6. कर्नाटक संगीत में उनकी विशिष्ट सेवा के सम्मान में, श्री नटराजन को कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों और उपाधियों से सम्मानित किया गया है। उनके सम्मानों में भारत सरकार द्वारा संगीत 'संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार', तमिलनाडु सरकार द्वारा विट्टासवई कलेग्नर "राज्य कलाकार सम्मान और तालीममणि", संगीत आकदमी, मद्रास से 'संगीत कला निधि' शामिल हैं।